

गुबरैले नट बोल्ट का उपयोग करते हैं

वीविल नामक गुबरैलों की टांगों के जोड़ पेंच से कसे होते हैं। यह पहली बार है कि प्रकृति में पेंच से कसे हुए जोड़ देखे गए हैं।

ट्राइगोनोप्टेरस ओब्लॉन्गस के सीटी स्कैन से प्राप्त चित्रों को देखते हुए जर्मनी के शासकीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय के एलेक्जेंडर राइडेल ने देखा कि संभवतः उसकी टांगें शरीर में पेंच के ज़रिए कसी हुई हैं। प्रत्येक टांग का सबसे ऊपरी हिस्सा, जिसे ट्रोचेंटर कहते हैं, शरीर में एक खांचे में पेंच क्रिया से फिट होता है। यह खांचा लगभग हमारी कूल्हे की हड्डी जैसा होता है।

नट-बोल्ट की यह व्यवस्था लगभग उसी तरह काम करती है जैसे रीढ़धारी प्राणियों में बॉल व सॉकेट जोड़ करता है या कब्जानुमा जोड़ करता है। मांसपेशियां पूरी टांग पर फैली होती हैं और ये पेंच को उसके नट में खींचने का काम करती हैं। ठीक पेंच की तरह, इस क्रिया के

दौरान टांग घूमती है।

यह क्रिया खास तौर से *ट्राइगोनोप्टेरस* जैसे गुबरैलों के लिए उपयोगी है जो पेड़ों पर रहते हैं और उन्हें लगातार टहनियों को

अपनी टांगों से पकड़कर रखना

होता है। सही तरीके से टहनी पर पकड़ बनाने में टांगों का घूमना काफी मददगार हो सकता है।

राइडेल ने यही व्यवस्था वीविल्स की 15 अन्य प्रजातियों में देखी है और उनका विचार है कि यह सभी वीविल प्रजातियों में होती होगी। इस अवलोकन से तो ऐसा लगता है कि नट-बोल्ट के आविष्कार में वीविल हमसे बाज़ी मार ले गए हैं। (*स्रोत फीचर्स*)

